OM 15_Page 1 and 2 13-10-2014 17:01 Page 2

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक - 15 नवम्बर-I, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

जहाँ रुहानी फ़ील है वहाँ व्यक्ति स्वत:हील है

अहमदाबाद। 'पीसफुल माइंड एंड ब्लीसफुल लाइफ' विषयक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शिवानी। सभा में उपस्थित शहर के डॉक्टर्स प्रोफेशन से जुड़े लोग।

अहमदाबाद। जब आपके पास हार्ट ब्लॉकेजेज़ वाले पेशेन्ट आते हैं तब उन्हें ये बताया जाता है कि आपको ब्लॉकेज है और आपको बाई पास करवाना है, किन्तु अभी आप यह भी ज़रूर बतायें कि ये ब्लॉकेजेज़ यहाँ दिल में नहीं बल्कि आत्मा में पहले ब्लॉकेज है, उसे खत्म करना है। उक्त उद्‌गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'पीसफुल माइंड एंड ब्लीसफुल लाइफ' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में लोकप्रिय आध्यात्मिक वक्ता ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये।

'डिजिटल एक्स रे ऑफ सेल्फ एंड ईज़ी लाइफ फॉर बिज़ी पिपल' विषय पर उन्होंने कहा कि जब पेशेन्ट आपके पास आता है तब वो एक तो दर्द में होता है, दूसरा उसको डॉक्टर के ऊपर पूरा विश्वास रहता है और तीसरा वो आपके सामने पूरा समर्पण हो जाता है। सभी डॉक्टर्स अपने पेशेन्ट के प्रेसक्रिप्शन में यह भी लिखें कि इन दवाइयों के साथ आपको गुस्सा नहीं करना है, शांत रहना है। ऑपरेशन थियेटर में 2 मिनट साइलेन्स में रह कर फिर ऑपरेशन शुरु करें।

उन्होंने भोजन की शुद्धता व उसके प्रति छिपे भावनाओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि - एक होता है रेस्टोरेन्ट का खाना, दूसरा है घर में नौकर के हाथ का खाना, तीसरा है घर में माँ के हाथ का खाना और चौथा है मंदिर का प्रसाद खाना। इन चार प्रकार के खाने में अंतर है। रेस्टोरेन्ट वाले को धंधा करना है, वो भोजन बनाता है, उसके पीछे उसका पैसे कमाने का आशय है। दूसरा घर में नौकर जो खाना पका रहा है, वो अपनी नौकरी कर रहा है। तीसरा घर में जो माँ खाना बना रही है, वो उस भाव से बना रही है कि मैं अपने परिवार के लिये भोजन बना रही हूँ और चौथे प्रकार का मंदिर का भोजन, जो एक प्रसाद है, उस भोजन से आत्मा को शक्ति मिलती है।

उन्होंने बैलेन्स शीट ऑफ लाइफ विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अगर हमारे विचार, कर्म और व्यवहार अलग-अलग होंगे तो हमारे जीवन रूपी बैलेन्स शीट भी अलग-अलग बन जायेंगे। हमें किसी की कॉपी नहीं करनी है, हर एक आत्मा का अपना संस्कार है, अपना पार्ट है। हमें किसी के साथ यह स्पर्धा नहीं करनी है कि मुझे इससे आगे जाना है या मुझे इससे भी अच्छा या बेहतर बनना है क्योंकि आज आप एक व्यक्ति से आगे जाने की कोशिश करेंगे, उस एक व्यक्ति से अच्छा परफॉर्म करेंगे तो फिर दूसरा व्यक्ति भी आपको तुरंत तैयार मिल जायेगा जो आपको इस स्पर्धा में और आगे ले जाने के लिए खड़ा होगा। इस रेस में इसी प्रकार से परफॉर्म करते जाने से हम आज अपने मूल्यों से नीचे गिरते गये हैं। एक दूसरे से रेस करने के बजाये हम जहाँ हैं वहाँ से हम खुद ही आगे बढ़ें। उन्होंने आगे कहा कि जो आपको आता है वो औरों को सिखा दो तो वो भी आगे बढ़ जायेगा। आप जो एनर्जी दूसरों को देंगे तो वही एनर्जी वापस आपके पास आयेगी। अगर आप ब्लैक एनर्जी देंगे तो ब्लैक ही आपको वापस मिलेगी। अगर आप वाइट एनर्जी भेजेंगे तो आपके पास वाइट एनर्जी आयेगी। तो जितनी बार हम वाइट एनर्जी भेजेंगे उतना फायदा किसको होगा? हमें ही होगा।

कार्यक्रम के बाद ए.एम.ए. की प्रेसीडेंट स्मिता शाह को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सरला।

दिल्ली के सुप्रसिद्ध कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मोहित गुप्ता ने बताया कि आज मानव सोच कुछ और रहा है और कर कुछ और रहा है। मुझे करना है, मुझे करना है, करना है, मुझे पता है, मुझे मालूम है। लेकिन बाहर का प्रभाव हमें प्रभावित कर जाता है और हम बदल जाते हैं। हमारा रिमोट कंट्रोल किसके पास होना चाहिये? हमारे पास

-- शेष पेज 11 पर

इन साइड पर...

"हमने पवित्रता को अपनाया है"

मन रूपी साम्राज्य को बुद्धि रूपी सम्राट ही नियंत्रित करेगा

कोरे कागज़ सा मन...

सावधान! कहीं सोच ही शत्रु तो नहीं?

मूल्यों की री-इंजीनियरिंग की आवश्यकता

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। हम सभी जानते हैं कि हमारे पूर्वज देवता थे, लेकिन आज हम लेने वाले बन गये। आज के जीवन में असंतुष्टता एवं निराशा का मूल कारण ही ये है, कि हम दूसरों से सिर्फ लेने की अपेक्षा रखते हैं, जबकि जीवन की असली खुशी तो देने में है। उक्त उद्‌गार ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इंजीनियर्स डे के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. बृजमोहन ने व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि प्रकृति की भी कोई चीज़ उसके अपने लिए नहीं है, उसका असली महत्व दूसरों के लिए उपयोग में आना है। जीवन में जितनी संग्रह वृत्ति बढ़ती जा रही है, उतनी ही विकृतियाँ भी बढ़ती जाती हैं। उन्होंने आगे कहा कि हमारा देश शुरु से ही आध्यात्मिक रहा है, जिसको कि आज सारा विश्व भी समझने का प्रयास कर रहा है। हमारी संस्कृति दातापन की रही है, वो तो अभी कुछ सदियों में ये गिरावट आई है। अब पुन: हमें

---शेष पेज 5 पर...